शहरों को चाइल्ड फ्रेंडली बनाने में स्थानीय निकायों की भूमिका

भारत बहुत तेज़ी से शहरीकरण की ओर बढ़ रहा है। बेहतर आजीविका और बेहतर ज़िन्दगी के लिए बड़े स्तर पर लोग शहरों में आकर बस रहे हैं। शहरों का आबादी घनत्व जिस तेज़ी से बढ़ रहा है; उतनी ही तेज़ी से शहरों के ढांचागत विकास में भी तेज़ी आ रही है। लोगों की बेहतर जीवन शैली के लिए बेहतर आवास, शहरी सुविधाएं और आवागमन के साधन देना नगरीय निकायों की प्राथमिकता हो गयी है। शहरों में बढ़ रही इस आबादी में छोटे बच्चों की भी बड़ी संख्या है। ऐसे में शहरों का ढांचागत निर्माण उन्हें भी प्रभावित करता है। प्रारम्भिक बचपन के विकास पर भौतिक वातावरण; जैसे पड़ोस और मोहल्ले, सार्वजनिक स्थान, पार्क, सीखने के स्थान आदि के प्रभाव को समझना भी आवश्यक है।

हम सभी जानते हैं कि छोटे बच्चे, जन्म से लेकर लगभग ६ साल की आयु तक, विकास की महत्वपूर्ण अवधियों से गुज़रते हैं। जीवन के इस शुरुआती चरण में उनके मस्तिष्क का विकास बहुत तेज़ी से हो रहा होता है। वे बाहरी उत्तेजनाओं और अनुभवों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं, जो उनके संज्ञानात्मक, शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक विकास को एक आकार देते हैं। इसलिए, बच्चों के समग्र विकास के लिए एक बेहतर स्थिति प्रदान करने के लिए एक बाल मित्र (चाइल्ड फ्रेंडली) शहरी वातावरण का निर्माण करना आवश्यक हो जाता है।

शहरी निकायों की जिम्मेदारी बुनियादी ढांचे, आवास, परिवहन और सामाजिक सेवाओं सहित शहरी क्षेत्रों की योजना, डिजाइन और सामाजिक वातावरण को एक आकार देने की है। ऐसे में यह आवश्यक है कि वे शहरों की दशा और दिशा इस प्रकार से तय करें कि उसमें बच्चों के लिए भी व्यापक स्थान हो। यदि कोई शहर बच्चों और उनके अभिभावकों के नज़रिए से सुरक्षित और आरामदायक है तो हम मान सकते हैं कि वह समुदाय के एक बहुत बड़े हिस्से के लिए भी सुरक्षित और आरामदायक साबित हो सकता है।

समग्र दृष्टिकोण, सहयोग और समन्वय

अगर हम ३-४ साल तक के बच्चों के नज़रिए से सोचें तो घर के बाहर एक बच्चे की पहुँच अधिकतम ३०० से ६०० मीटर के दायरे में होती है। इस दायरे में वे अपने अभिभावकों के साथ बाहर निकलते हैं। मोहल्ले के उद्यान, पड़ोस में राशन-दूध-साग सब्जी की खरीद, गलियों या मोहल्ले के चौक में चहल-कदमी करते हैं। शाला पूर्व शिक्षा के लिए आंगनवाडी या प्ले स्कूल जाते हैं और स्वास्थ्य आदि ज़रूरतों के लिए प्राथमिक अस्पताल। अधिकांशत: ये सभी स्थान ६०० मीटर की परिधि में उपलब्ध होते हैं।

ऐसे में बहुत आवश्यक हो जाता है कि शहरी निकाय इन सभी स्थानों; जहाँ बच्चे जाते हैं और उस से सम्बंधित मार्ग को अपने स्तर पर बच्चों के लिए सुगम, सहज, सुरक्षित और मनोरंजक बनाएं। शहरी निकायों को सभी सम्बंधित विभागों (जैसे समेकित बाल विकास, शिक्षा और स्वास्थ्य आदि), सामुदायिक संगठनों, विषय विशेषज्ञों, स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं और अन्य हितधारकों के सहयोग और समन्वय की आवश्यकता पर भी जोर देना चाहिए ताकि प्रारम्भिक बचपन के विकास को बढ़ावा देने के प्रयासों को समग्र शहरी विकास रणनीतियों को एकीकृत किया जा सके।

५ साल तक के बच्चों के लिए मुख्यतः ३-४ विभाग प्रमुख है। बच्चों की शिक्षा और पोषण के लिए समेकित बाल विकास और प्रारम्भिक शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य और टीकाकरण के लिए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की सेवाएं प्रमुख है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए परिवहन विभाग की जिम्मेदारी बनती है। शेष मोहल्लों और नगर को बच्चों के लिए समावेशी, सुगम और सहज बनाने के लिए शहरी निकायों की महती भूमिका है।

सुरक्षित और मनोरंजक परिवेश का निर्माण

अधिकांश अभिभावकों की शिकायत है कि बच्चा मोबाइल फोन और टीवी में इस कदर व्यस्त हैं कि बाहर जाने के लिए समय नहीं मिलता। बाहर ले जाना भी चाहे तो शहर की गलियों और सड़कों को लेकर भी अभिभावकों की अपनी चिंताएं हैं। उदयपुर के नवरत्न काम्प्लेक्स में रहने वाली खेरुन्निसा का कहना है कि आधी गलियां अवैध पार्किंग से भरी रहती है और बचे हुए हिस्से में लड़के फर्राटे से मोटरसाइकिल लेकर जाते हैं। ऐसे में कैसे बच्चों के साथ बाहर जाया जाए ! उनका कहना है कि १० मिनट की वाक के बाद अगर पार्क में जाओ तो वहां भी बच्चे क्रिकेट खेलते नज़र आते हैं। ऐसे में छोटे बच्चों को गेंद से चोट लगने का ख़तरा बना रहता है।

खेरुन्निसा जैसे अभिभावकों की चिंताएं जायज़ है। शहरी निकायों को शहर के गली- मोहल्लों को प्रथम स्तर पर बच्चों के लिए मुफीद बनाया जाना चाहिए। पार्किंग के लिए निर्धारित स्थान, गति कम करने के लिए उचित उपाय, निर्देशक बोर्ड, आवारा पशुओं पर नियंत्रण, खुले तारों को व्यवस्थित करने, समय समय पर पेड़ों की टहनियों की कटाई- छंगाई करने की ज़रूरत है। वे सभी स्थान जहाँ बच्चे जाते हैं; वहां भी ध्यान देने की आवश्यकता है। बच्चों के खेलने के लिए विशेष क्षेत्र विकसित किये जा सकते हैं।

बच्चों के लिए न केवल सुरक्षित अपितु मनोरंजक परिवेश का निर्माण किया जाना भी ज़रूरी है। केवल सुरक्षा भर से बच्चे घर से नहीं निकलेंगे। उनके लिए खेलने के पर्याप्त स्थान, मनोरंजक और सीखते- सिखाते फुटपाथ और रास्ते, पर्याप्त दूरियों पर आराम करने के छायादार स्थान आदि का होना भी ज़रूरी है।

पुणे महानगर पालिका द्वारा विकसित चिल्ड्रेन ट्राफिक पार्क

शहर में हरियाली को बढ़ावा देना भी बहुत ज़रूरी है। हरियाली जहाँ विभिन्न प्रकार के प्रदूषण को कम करने में सहायता प्रदान करती है, वहीँ बच्चों के लिए आराम और सीखने के अवसर भी उपलब्ध करवाती है। शहर में वायु और ध्वनि प्रदूषण को रोके जाने के लिए भी प्रयास करने होंगे। छोटे बच्चे वाहनों से निकलने वाले धुंएँ से सबसे पहले प्रभावित होते हैं। बच्चों की की लम्बाई और चार पहिया वाहनों के धुंए के निस्तारण की ऊंचाई अमूमन समान होती है। निर्माणाधीन घरों से उड़ने वाली धूल वाहनों के टायरों से उठने वाले महीन धूल कण भी बच्चों के सबसे ज्यादा प्रभावित करते हैं।

शहरी निकायों को चाहिए कि न केवल मोहल्लों बल्कि नगरीय स्तर पर भी बच्चों के लिए विशेष क्षेत्र विकसित किये जाए। ये वो स्थान हो सकते हैं, जहाँ बच्चे अपने अभिभावकों के साथ नियमित तौर पर आयें। यहाँ बच्चों के मनोरंजन और सीखने- सिखाने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाए जा सकते हैं। पुणे में स्थानीय नगर निगम द्वारा निर्मित बच्चों का ट्राफिक पार्क" एक शानदार उदाहरण है, जहाँ खेल खेल में बच्चों को ट्रेफिक नियम समझाए जाते हैं। यहाँ न केवल ट्रेफिक नियमों की जानकारी के लिए

अवसर हैं, बल्कि बच्चों के लिए साईकिल ट्रेक, खेलने के लिए झूले, सेंड पिट आदि भी मौजूद है। आदर्श बस स्टॉप की परिकल्पना भी इस पार्क में बखूबी बताई गयी है।

उदयपुर में विकसित होने जा रहे “सेंसरी पार्क” को भी ख़ास तौर पर ५ साल तक के बच्चों के लिए विअक्सित किया जा रहा है। अर्बन95 परियोजना के अंतर्गत स्थानीय निगम द्वारा गुलाब बाग़ में विकसित किये जा रहे इस पार्क में बच्चों के संज्ञानात्मक, शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक विकास के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। बच्चों की सकारात्मक देखभाल कैसे हो- अभिभावकों के लिए ये सीखने के भी मौके भी यहाँ उपलब्ध होंगे।

गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल सुविधाएं

गर्भवती माता प्रसव पूर्व अपनी जांच के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र जाती है। बच्चों के प्रसव के लिए वह अस्पताल पर निर्भर है। नवजात शिशु के टीकाकरण और देखभाल सहित आने वाले दिनों में उसके विकास की पूरी निगरानी के लिए स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र जिम्मेदार होते हैं। ऐसे में बहुत आवश्यक है कि शहरी क्षेत्र के सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बच्चों और उनके अभिभावकों के लिए सुगम और बेहतर स्थिति में हो। बच्चे की स्वास्थ्य जांच के लिए अस्पताल जाते समय वहां वेटिंग क्षेत्र में बच्चों के साथ १० मिनट से अधिक रुकना मुश्किल होता है। बच्चे बहुत देर तक एक ही स्थान पर खड़े नहीं रह सकते। बच्चों और उनके अभिभावकों के लिए आरामदायक बैठक की व्यवस्था, अपनी बारी का इंतज़ार करते समय बच्चों के मनोरंजन के लिए सामग्री और अवसर उपलब्ध करवाने, बच्चों की बेहतर परिवेश के तरीकों से सम्बंधित सन्देश आदि विकसित किये जा सकते हैं।

अर्बन95 परियोजना के अंतर्गत उदयपुर नगर निगम द्वारा विकसित चाइल्ड फ्रेंडली प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र , माछला मगरा, उदयपुर

घर के बाहर बच्चे सीखने के लिए आंगनवाडी केंद्र अथवा निजी प्ले स्कूल जाते हैं। ५ साल तक के बच्चे सीधे तौर पर इनसे संबंद्ध रहते है। इन स्थानों पर बच्चों के लिए अन्दर और खुले क्षेत्र में सीखने के पर्याप्त अवसर होने चाहिए। शहरी निकाय इन स्थानों को आदर्श रूप में विकसित कर सकते हैं। बच्चों के संज्ञानात्मक, शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास के लिए विभिन्न प्रकल्प इन स्थानों पर होने चाहिए। शहरी निकाय इन स्थानों के निर्माण के लिए जगह उपलब्ध करवाने, निर्माण और संचालन में सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

समुदाय की सहभागिता

कोई भी काम एकतरफा नहीं किया जा सकता। बहुत ज़रूरी है कि शहरी निकाय अपने सभी कामों में स्थानीय समुदाय की सहभागिता के लिए भी कदम उठाये। यदि समुदाय साथ जुड़ेगा तो वह जिम्मेदारी के साथ न केवल अपने दायित्व निभाएगा बल्कि प्रत्येक स्थान की निगरानी और रख रखाव पर भी ध्यान देगा। समावेशी वातावरण निर्माण में स्थानीय समुदाय बड़ी जिम्मेदारी निभा सकता है। उदयपुर सहित कई अन्य शहरी निकाय मोहल्लों के पार्कों को स्थानीय समुदायों द्वारा निर्मित संस्थाओं- संगठनों को गोद देते हैं। रख रखाव के लिए मासिक तौर पर एक निश्चित राशि भी इन्हें निकायों द्वारा दी जाती है। निगरानी और मरम्मत के लिए निगम की अपनी “उद्यान समिति” है; जो नियमित तौर पर इन संस्थाओं की निगरानी के साथ साथ क्षमतावर्धन के अवसर भी उपलब्ध करवाती है।

शहर को चाइल्ड फ्रेंडली बनाने के लिए समुदाय की सलाह भी काफी महत्वपूर्ण है। ऐसे में शहर में किसी ढांचागत विकास से पहले स्थानीय समुदाय की राय लेना आवश्यक है। ऐसे में निकाय द्वारा विकसित किये जा रहे विशेष क्षेत्रों या कार्यों का उपयोग और उन्हें सँभालने की जिम्मेदारी लेने को समुदाय तैयार होता है।

डाटा आधारित प्लानिंग और मोनिटरिंग

प्रारम्भिक बचपन के विकास पहल की योजना बनाने, क्रियान्वयन और निगरानी में डाटा और साक्ष्य आधारित दृष्टिकोण के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसमें निर्णय लेने और संसाधन आवंटन को सूचित करने के लिए बच्चे की भलाई, विकासात्मक परिणामों और हस्तक्षेप की प्रभावशीलता पर डेटा एकत्र करना और उसका विश्लेषण करना शामिल है। प्रारंभिक बचपन के विकास पर शहरी पहल के प्रभाव की निगरानी और मूल्यांकन के महत्व पर जोर देना भी आवश्यक है।

प्रारंभिक बचपन के विकास को शहरी विकास संदर्भ में एकीकृत करके शहरों को छोटे बच्चों और उनके अभिभावकों के लिए बेहतर बनाने को प्राथमिकता तय करने से शहर को हर एक उम्र और आय वर्ग के लिए बेहतर बनाया जा सकता है। प्रारंभिक बचपन के विकास में निवेश करने से न केवल व्यक्तिगत बच्चों और परिवारों को लाभ होता है, बल्कि टिकाऊ और समावेशी शहरी वातावरण के निर्माण में भी योगदान मिलता है।

अर्बन95 के बारे में

अर्बन95, वर्ष २०१६ में बर्नार्ड वैन लीयर फाउंडेशन द्वारा छोटे बच्चों के जीवन को आकार देने वाले परिदृश्य और अवसरों को सकारात्मक रूप से बदलने में मदद करने के लिए शुरू की गई एक पहल है। इस पहल के केंद्र में यह सवाल है कि "यदि आप शहर को ९५ सेमी से अनुभव कर सकते हैं, तो आप क्या बदलेंगे?" शहर के नीति निर्माताओं, योजनाकारों, वास्तुकारों और सामाजिक संस्थाओं के साथ काम करते हुए, अर्बन95 इस परिप्रेक्ष्य को दुनिया भर के शहरों में डिजाइन निर्णयों के केंद्र में लाने में मदद कर रहा है। इकली साउथ एशिया शहर को बच्चों के लिए बेहतर बनाने की दिशा में उदयपुर नगर निगम के साथ मिलकर साल २०१९ से ही कार्य कर रही है।